# ७ जलाते चलो

## कविता का सारांश

'जलाते चलो' कविता में कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने प्रेम और स्नेह के महत्व को रेखांकित किया है। उन्होंने बताया है कि विज्ञान की शक्ति के बावजूद भी, स्नेह और प्रेम के बिना अंधकार को मिटाना संभव नहीं है। हमें स्नेह और प्रेम के दीयों को निरंतर जलाते रहना चाहिए ताकि किसी दिन अंधकार का अंत हो सके और सवेरा हो सके।

### शब्दार्थ:

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **दिये** | : | दीपक | **शिला** | : | चट्टान |
| **स्नेह** | : | प्यार, प्रेम | **साक्षी** | : | गवाह |
| **धरा** | : | पृथ्वी, धरती | **अनगिन** | : | अनगिनत, असंख्य |
| **तिमिर** | : | अंधकार | **ज्योति** | : | प्रकाश |
| **चुनौती** | : | ललकार | **लौ** | : | लपट, ज्वाला |
| **सरित** | : | सरिता, नदी | **निशा** | : | रात्रि |
| **निरंतर** | : | लगातार | | | |

## प्रश्न अभ्याश

### मेरी समझ से

**(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए–**

1. **निम्नलिखित में से कौन-सी बात इस कविता में मुख्य रूप से कही गई है?**

- भलाई के कार्य करते रहना ★
- दीपावली के दीपक जलाना
- बल्ब आदि जलाकर अंधकार दूर करना
- तिमिर मिलने तक नाव चलाते रहना

2. **"जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की, चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी"**

   **यह वाक्य किससे कहा गया है?**

- तूफ़ान से
- मनुष्यों से ★
- दीपकों से
- तिमिर से

**(ख) अब अपने मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए कि आपने ये ही उत्तर क्यों चुने?**

**उत्तर:-**

1. इस कविता में भलाई के कार्य करने की बात मुख्य रूप से इसलिए की गई है क्योंकि कवि यहां प्रेम, स्नेह और मानवता के मूल्यों को बढ़ावा दे रहा है।
2. यह कविता मनुष्य को प्रेरित करती है कि वह अपने अंदर के ज्ञान और सत्य के दीप को जलाए। कवि का मानना है कि मनुष्य ही दुनिया को बदल सकता है।

## मिलकर करें मिलान

**कविता में से चुनकर कुछ शब्द यहाँ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।**

| शब्द | अर्थ या संदर्भ | उत्तर: |
|---|---|---|
| 1. अमावस | 1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है। | 1. 4 |
| 2. पूर्णिमा | 2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक, बल्ब आदि उपकरण। | 2. 1 |
| 3. विधुत-दिये | 3. समय, काल, युग संख्या में चार माने गए हैं- सत्ययुग (सतयुग), त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग । | 3. 2 |
| 4. युग | 4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता। | 4. 3 |

## पंक्तियों पर चर्चा

**कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए-**

**"दिये और तूफ़ान की यह कहानी**
**चली आ रही और चलती रहेगी,**
**जली जो प्रथम बार लौ दीप की**
**स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी।**
**रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि**
**कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।"**

**उत्तर:** यह कविता दीये और तूफान, यानी प्रकाश और अंधेरे के बीच एक सतत संघर्ष को दर्शाती है। कवि कहता है कि यह संघर्ष हमेशा से रहा है और हमेशा रहेगा। दीया, जो प्रतीकात्मक रूप से ज्ञान, आशा और जीवन का प्रतीक है, हमेशा अंधकार (तूफान) के खिलाफ लड़ता रहेगा।

**पंक्ति विश्लेषण:**

- "**दिये और तूफ़ान की यह कहानी चली आ रही और चलती रहेगी**": यह पंक्ति इतिहास को दर्शाती है, जहां प्रकाश और अंधेरे के बीच संघर्ष हमेशा से रहा है।

- "**जली जो प्रथम बार लौ दीप की स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी**": यह पंक्ति ज्ञान की ज्योति को दर्शाती है, जो एक बार प्रज्वलित होने के बाद कभी बुझती नहीं है।
- "**रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा**": यह पंक्ति आशा का संदेश देती है। यह कहती है कि अगर धरती पर एक भी दीया जलता रहेगा तो अंधेरा हमेशा के लिए नहीं रहेगा।

## सोच-विचार के लिए

**कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए–**

(क) **कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए किन वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं?**

**उत्तर**: कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए नीचेदी गई वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं:

- अमावस
- निशा
- तिमिर की सरिता
- तिमिर की शिला
- पवन
- तूफ़ान

(ख) **यह कविता आशा और उत्साह जगाने वाली कविता है। इसमें क्या आशा की गई है? यह आशा क्यों की गई है?**

**उत्तर**: यह कविता जीवनरूपी दीप में स्नेह व अपनापन रूपी तेल भरकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। निराशा के बीच ही आशा की एक किरण दिखाई देती है । मानव और विश्व कल्याण हेतु हमें महापुरुषों के पदचिह्नों पर चलना होगा। प्रेम, सद्भावना और मानवीय सौहार्द से यह जीवन खुशहाल बनता है। नई पीढ़ी इतिहास में हुए महान लोगों से प्रेरणा लेकर एक सुंदर भविष्य की नींव रखेगी। कविता मनुष्य के हृदय में विश्व बंधुत्व की आशा जाग्रत करती है।

(ग) **कविता में किसे जलाने और किसे बुझाने की बात कही गई है?**

**उत्तर**: कविता में कवि मनुष्य को आशा रूपी और स्नेह से भरे दीपक चारों ओर जले और बिना स्नेह वाले विधुत - दिये बुझा देने की बात कर रहें हैं क्योंकि बनावटी वस्तुएँ बाधा उत्पन्न करती हैं।

## कविता की रचना

**“जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर**
**कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा ।”**

इन पंक्तियों को अपने शिक्षक के साथ मिलकर लय सहित गाने या बोलने का प्रयास कीजिए। आप हाथों से ताल भी दे सकते हैं। दोनों पंक्तियों को गाने या बोलने में समान समय लगा या अलग-अलग? आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि इन पंक्तियों को बोलने या गाने में लगभग एक-समान समय लगता है। केवल इन दो पंक्तियों को ही नहीं, इस कविता की प्रत्येक पंक्ति को गाने में या बोलने में लगभग समान समय ही लगता है। इस विशेषता के कारण यह कविता और अधिक प्रभावशाली हो गई है।
आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको और भी अनेक विशेष बातें दिखाई देंगी।

(क) **इस कविता को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए, जैसे इस कविता की पंक्तियों को 2–4, 2-4 के क्रम में बाँटा गया है आदि।**

**उत्तर**: विद्यार्थी स्वयं करेंगे

**(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।**

**उत्तर:** कविता पर आधारित रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थी स्वयं करेंगे। अपने अध्यापकों व साथियों की सहायता से गतिविधि पूर्ण करें।

## मिलान

**स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए-**

| स्तंभ 1 | स्तंभ 2 | उत्तर: |
|---|---|---|
| 1. कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा। | 1. विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा। | 1. 3 |
| 2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर। | 2. विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है? | 2. 4 |
| 3. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी। | 3. विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा। | 3. 2 |
| 4. बिना स्नेह विधुत - दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा। | 4. दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए। | 4. 1 |

## अनुमान या कल्पना से

**अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—**

(क) **"दिये और तूफ़ान की यह कहानी**
**चली आ रही और चलती रहेगी"**

**दीपक और तूफ़ान की यह कौन-सी कहानी हो सकती है जो सदा से चली आ रही है?**

**उत्तर:** यह पंक्ति हमें एक ऐसी कहानी की ओर ले जाती है जो समय की शुरुआत से ही चल रही है। यह कहानी प्रकाश और अंधेरे, अच्छाई और बुराई, ज्ञान और अज्ञानता के बीच एक सतत संघर्ष की है।

- **दीपक**: दीपक यहां ज्ञान, आशा, जीवन और सकारात्मकता का प्रतीक है। यह वह प्रकाश है जो अंधेरे को दूर करता है और हमें आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है।
- **तूफ़ान**: तूफ़ान अंधेरे, संकट, बुराई और नकारात्मकता का प्रतीक है। यह वह शक्ति है जो हमेशा प्रकाश को मिटाने की कोशिश करती है।

(ख) **"जली जो प्रथम बार लौ दीप की**
**स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी"**

**दीपक की यह सोने जैसी लौ क्या हो सकती है जो अनगिनत सालों से जल रही है?**

**उत्तर:** दीपक की सोने जैसी लौ ज्ञान का प्रतीक है। यह वह ज्ञान है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आ रहा है। यह ज्ञान हमें सिखाता है कि कैसे जीना है, कैसे सोचना है और कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करना है।

- **सोने जैसी लौ**: सोना एक कीमती धातु है जो अमरता और स्थायित्व का प्रतीक है। इसी तरह, ज्ञान भी एक अमूल्य खजाना है जो हमेशा बना रहता है।
- **अनगिनत सालों से जल रही है**: यह बताता है कि ज्ञान का प्रकाश सदियों से जल रहा है। यह मानव सभ्यता का आधार है।

## शब्दों के रूप

**"कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी"**

**'अमावस' का अर्थ है 'अमावस्या'। इन दोनों शब्दों का अर्थ तो समान है लेकिन इनके लिखने-बोलने में थोड़ा-सा अंतर है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनसे मिलते-जुलते दूसरे शब्द कविता से खोजकर लिखिए। ऐसे ही कुछ अन्य शब्द आपस में चर्चा करके खोजिए और लिखिए।**

1. **दिया** - दीप
2. **उजेला** - उजाला
3. **अनगिन** - अनगिनत
4. **दिन** - दिवस
5. **धरा** - धरती
6. **सिल** - शिला

## अर्थ की बात

(क) **"जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर"**

**इस पंक्ति में 'चलो' के स्थान पर 'रहो' शब्द रखकर पढ़िए। इस शब्द के बदलने से पंक्ति के अर्थ में क्या अंतर आ रहा है? अपने समूह में चर्चा कीजिए।**

**उत्तर**: "चलो" और "रहो" शब्दों का प्रभाव-

**मूल पंक्ति** : जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर

**बदला हुआ वाक्य** : जलाते रहो ये दिये स्नेह भर-भर

**अर्थ में अंतर-**

**मूल वाक्य** : यह वाक्य हमें एक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह कहता है कि हमें दीये जलाते रहना चाहिए, यानी हमें लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। यह एक सक्रिय और गतिशील दृष्टिकोण को दर्शाता है।

**बदला हुआ वाक्य** : यह वाक्य हमें एक स्थिति बनाए रखने के लिए कहता है। यह कहता है कि हमें दीये जलाए हुए रखना चाहिए, यानी हमें इस स्थिति को स्थिर रखना चाहिए। यह एक स्थिर और निष्क्रिय दृष्टिकोण को दर्शाता है।

(ख) **कविता में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्व होता है। यदि वे शब्द बदल दिए जाएँ तो कविता का अर्थ भी बदल सकता है और उसकी सुंदरता में भी अंतर आ सकता है।**

**नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। पंक्तियों के सामने लगभग समान अर्थों वाले कुछ शब्द दिए गए हैं। आप उनमें से वह शब्द चुनिए, जो उस पंक्ति में सबसे उपयुक्त रहेगा-**

1. **बहाते चलो ________ तुम वह निरंतर** (**नैया, नाव, नौका**)
   **कभी तो तिमिर का _____ मिलेगा।** (**तट, तीर, किनारा**) **उत्तर**: नैया, किनारा

2. **रहेगा _____ पर दिया एक भी यदि** (**धरा, धरती, भूमि**)
   **कभी तो निशा को ______ मिलेगा।।** (**प्रात:, सुबह, सवेरा**) **उत्तर**: धरा, सवेरा

3. **जला दीप पहला तुम्हीं ने _____ की** (**अंधकार, तिमिर, अँधेरे**)
   **चुनौती _____ बार स्वीकार की थी।** (**प्रथम, अव्वल, पहली**) **उत्तर**: तिमिर प्रथम

**प्रतीक**

(क) **"कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा"**

**निशा का अर्थ है– रात।**

**सवेरा का अर्थ है– सुबह ।**

**आपने अनुभव किया होगा कि कविता में इन दोनों शब्दों का प्रयोग 'रात' और "सुबह' 'के लिए नहीं किया गया है। अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि 'निशा' और 'सवेरा' का इस कविता में क्या-क्या अर्थ हो सकता है।**

(**संकेत– निशा से जुड़ा है 'अँधेरा' और सवेरे से जुड़ा है 'उजाला'**)

**उत्तर**: आइए, इन शब्दों के संभावित अर्थों पर गौर करें:

**निशा**:

- अंधकार: सिर्फ बाहरी अंधेरा ही नहीं, बल्कि मन का अंधेरा, दुःख, निराशा, और मुश्किलें भी निशा से जुड़ी हो सकती हैं।
- अज्ञात: जो कुछ हमें नहीं पता, जो कुछ अनिश्चित है, वह भी निशा के समान है।
- बुरा समय: जीवन में आने वाले कठिन समय, मुसीबतें, और संकट भी निशा के रूप में देखे जा सकते हैं।

**सवेरा**:

- उजाला: सिर्फ सूर्योदय का उजाला ही नहीं, बल्कि खुशी, आशा, और सकारात्मकता भी सवेरे से जुड़ी होती है।
- ज्ञान: अज्ञानता के अंधेरे को दूर कर, ज्ञान का प्रकाश लाना भी सवेरे के समान है।
- सुखद समय: मुश्किलों के बाद आने वाला सुखद समय, सफलता, और शांति भी सवेरा कहला सकती है।

(ख) **कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में मिलकर इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें उपयुक्त स्थान पर लिखिए।**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिये | अँधेरा | अमावस | पूर्णिमा | दिवस | तिमिर | नाव | किनारा |
| शिला | ज्योति | उजेला | तूफान | लौ | स्वर्ण | जलना | बुझना |

**(ग) अपने समूह में मिलकर 'निशा' और 'सवेरा' के लिए कुछ और शब्द सोचिए और लिखिए।**
**(संकेत - नीचे दिए गए चित्र देखिए और इन पर विचार कीजिए।)**

**उत्तर:**

- निशा :- रात्रि, अंधेरी, तमा, निशि
- सवेरा :-प्रभात, उषा, भोर, दिवाकर

## पंक्ति से पंक्ति

**"जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की**
**चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी"**
**कविता की इस पंक्ति को वाक्य के रूप में इस प्रकार लिख सकते हैं-**
**"तुम्हीं ने पहला दीप जला तिमिर की चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी ।**
**अब नीचे दी गई पंक्तियों को इसी प्रकार वाक्यों के रूप में लिखिए-**

1. **बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर ।**

**उत्तर:** तुम वह नाव निरंतर बहाते चलो।

2. **जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर ।**

**उत्तर:** तुम ये दिये स्नेह भर-भर जलाते चलो।

3. **बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।**

**उत्तर:** इन्हें बुझाओ, इस तरह पथ नहीं मिल सकेगा।

4. **मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।**

**उत्तर:** मगर आज विश्व पर दिन में ही अमावस की तरह निशा क्यों छा रही है।

## सा/सी/से का प्रयोग

**"घिरी आ रही है अमावस निशा-सी**
**स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी"**
**इन पंक्तियों में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची है। इनमें 'सी' शब्द पर ध्यान दीजिए। यहाँ 'सी' शब्द समानता दिखाने के लिए प्रयोग किया गया है। 'सा/सी/से' का प्रयोग जब समानता दिखाने के लिए किया जाता है तो इनसे पहले योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है।**
**अब आप भी विभिन्न शब्दों के साथ 'सा / सी / से' का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।**

**उत्तर:**

1. आकाश सा नीला है।
2. उसकी आँखें हीरे सी चमकती हैं।
3. बच्चा बिल्ली सा मुंह बना रहा है।
4. उसका हास्य मोती के हार से भी सुंदर था।
5. बगीचा फूलों से भरा हुआ है, मानो स्वर्ग सा हो।

Free worksheets, Learning material, practice tests & more at www.onepointlearning.com

# पाठ से आगे

## आपकी बात

(क) **“रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि**
**कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा ”**
**यदि हर व्यक्ति अपना कर्तव्य समझ ले और दूसरों की भलाई के लिए कार्य करे तो पूरी दुनिया सुंदर बन जाएगी। आप भी दूसरों के लिए प्रतिदिन बहुत-से अच्छे कार्य करते होंगे। अपने उन कार्यों के बारे में बताइए ।**
**उत्तर:** हमें अपने परिवार के सदस्यों की मदद करना, दोस्तों की मदद करना, गरीबों को भोजन दान करना, पेड़ लगाना, सफाई अभियान में भाग लेना, जानवरों की देखभाल करना आदि कार्य करने चाहिए।

(ख) **इस कविता में निराश न होने, चुनौतियों का सामना करने और सबके सुख के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। यदि आपको अपने किसी मित्र को निराश न होने के लिए प्रेरित करना हो तो आप क्या करेंगे? क्या कहेंगे? अपने समूह में बताइए।**
**उत्तर:** जब हमारा कोई मित्र निराश हो तो उसे प्रेरणादायक कहानियाँ सुनाकर, सकारात्मक बातेंकरकर, मज़ाक करना आदि तरीकों से अपने मित्र को प्रेरित कर सकते हैं।

(ग) **क्या आपको कभी किसी ने कोई कार्य करने के लिए प्रेरित किया है? कब? कैसे? उस घटना के बारे में बताइए।**
**उत्तर:** छात्र स्वयं लिखे।

## अमावस्या और पूर्णिमा

(क) **“भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह**
**कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी”**
**आप अमावस्या और पूर्णिमा के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। क्या आप जानते हैं कि अमावस्या और पूर्णिमा के होने का क्या कारण है?**

**आप आकाश में रात को चंद्रमा अवश्य देखते होंगे। क्या चंद्रमा प्रतिदिन एक-सा दिखाई देता है? नहीं। चंद्रमा घटता-बढ़ता दिखाई देता है। आइए जानते हैं कि ऐसा कैसे होता है। आप जानते ही हैं कि चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है जबकि पृथ्वी सूर्य की।**

**आप यह भी जानते हैं कि चंद्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं होता। वह सूर्य के प्रकाश से ही चमकता है। लेकिन पृथ्वी के कारण सूर्य के कुछ प्रकाश को चंद्रमा तक जाने में रुकावट आ जाती है। इससे पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ती है, जो प्रतिदिन घटती-बढ़ती रहती है। सूरज का जो प्रकाश बिना रुकावट चंद्रमा तक पहुँच जाता है, उसी से चंद्रमा चमकदार दिखता है। इसी छाया और उजले भाग की आकृति में आने वाले परिवर्तन को चंद्रमा की कला कहते हैं।**

**चंद्रमा की कला धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और पूर्णिमा की रात चंद्रमा पूरा ‘दिखने लगता है। इसके बाद कला धीरे-धीरे घटती रहती है और अमावस्या वाली रात चाँद दिखाई नहीं देता। चंद्रमा की कलाओं के घटने के दिनों को ‘कृष्ण पक्ष’ को कहते हैं। ‘कृष्ण’ शब्द का एक अर्थ काला भी है। इसी प्रकार चंद्रमा की कलाओं के बढ़ने के दिनों को ‘शुक्ल पक्ष’ कहते हैं। ‘शुक्ल’ शब्द का एक अर्थ ‘उजला’ भी है।**
**उत्तर:** स्वयं कीजिए।

**(ख) अब नीचे दिए गए चित्र में अमावस्या, पूर्णिमा, कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को पहचानिए और ये नाम उपयुक्त स्थानों पर लिखिए–**

**(यदि पहचानने में कठिनाई हो तो आप अपने शिक्षक, परिजनों या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।)**

**उत्तर:** स्वयं कीजिए।

## तिथिपत्र

**आपने तिथिपत्र (कैलेंडर ) अवश्य देखा होगा। उसमें साल के सभी महीनों की तिथियों की जानकारी दी जाती है। नीचे तिथिपत्र के एक महीने का पृष्ठ दिया गया है। इसे ध्यान से देखिए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**जनवरी 2023**

11-30 पौष 1-11 माघ, शक 1944

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | 1 दशमी (शुक्ल) | 8 द्वितीया (कृष्ण) | 15 अष्टमी (कृष्ण) | 22 प्रतिपदा (शुक्ल) | 29 अष्टमी (शुक्ल) |
| सोमवार | 2 एकादशी (शुक्ल) | 9 द्वितीया (कृष्ण) | 16 नवमी (कृष्ण) | 23 द्वितीया (शुक्ल) | 30 नवमी (शुक्ल) |
| मंगलवार | 3 द्वादशी (शुक्ल) | 10 तृतीया (कृष्ण) | 17 दशमी (कृष्ण) | 24 तृतीया (शुक्ल) | 31 दशमी (शुक्ल) |
| बुधवार | 4 त्रयोदशी (शुक्ल) | 11 चतुर्थी (कृष्ण) | 18 एकादशी (कृष्ण) | 25 चतुर्थी (शुक्ल) | |
| गुरुवार | 5 चतुर्दशी (शुक्ल) | 12 पंचमी (कृष्ण) | 19 द्वादशी (कृष्ण) | 26 वसंत पंचमी (शुक्ल) | |
| शुक्रवार | 6 पूर्णिमा | 13 षष्ठी (कृष्ण) | 20 त्रयोदशी (कृष्ण) | 27 षष्ठी (शुक्ल) | |
| शनिवार | 7 प्रतिपदा (कृष्ण) | 14 सप्तमी (कृष्ण) | 21 अमावस्या | 28 सप्तमी (शुक्ल) | |

© NCERT not to be republished

**(क) दिए गए महीने में कुल कितने दिन हैं?**

**उत्तर:** दिए गए जनवरी 2023 महीने में कुल 31 दिन हैं।

**(ख) पूर्णिमा और अमावस्या किस दिनाँक और वार को पड़ रही है?**

**उत्तर:** पूर्णिमा : 6 जनवरी (शुक्रवार) को पड़ रही है।
अमावस्या : 21 जनवरी (शनिवार) को पड़ रही है।

**(ग) कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी में कितने दिनों का अंतर है?**त्तर:

**उत्तर:** कृष्ण पक्ष की सप्तमी : 14 जनवरी (शनिवार)
शुक्ल पक्ष की सप्तमी : 28 जनवरी (शनिवार)
दोनों के बीच का अंतर : 15 दिन

**(घ) इस महीने में कृष्ण पक्ष में कुल कितने दिन हैं?**

**उत्तर:** इस महीने कृष्ण पक्ष 14 दिन का है।

(ङ) **'वसंत पंचमी' की तिथि बताइए ।**

**उत्तर:** वसंत पंचमी 26 जनवरी (गुरुवार) को पड़ रही है।

## आज की पहेली

**समय साक्षी है कि जलते हुए दीप**
**अनगिन तुम्हारे पवन ने बुझाए।**
**'पवन' शब्द का अर्थ है हवा।**
**नीचे एक अक्षर-जाल दिया गया है। इसमें 'पवन' के लिए उपयोग किए जाने वाले अलग-अलग नाम या शब्द छिपे हैं। आपको उन्हें खोजकर उन पर घेरा बनाना है, जैसा एक हमने पहले से बना दिया है। देखते हैं, आप कितने सही नाम या शब्द खोज पाते हैं।**

**उत्तर:**

- हवा
- वायु
- अनिल
- समीर
- मारुत
- बयार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बा | द | ल | ई | ब |
| प | अ | नि | ल | या |
| व | क | स | मी | र |
| न | ह | वा | यु | ब |
| मा | रु | त | स | ड़ |